

पद १६८

(रागः हमीर - तालः धमार)

सधन सुखधाम अकाम अरूप रूप नहि रंग बरन कछु रक्तपीत
अरुसाम ॥ध्रु. ॥ चिन्मार्तांड अखंड प्रचंड निजानंद अनाम ॥१॥